Vol 3 Issue 10 Nov 2013 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-10, Nov-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

सिन्धु–सरस्वती सभ्यताः कालीबंगा के विशेष सन्दर्भ में

मुकेश मान
(शोध छात्रा) श्री जे.जे. टी. विश्वविद्यालय, झुन्झुनु (राज.)

सारांश : विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक सैन्धव सभ्यता की खोज का इतिहास अत्यन्त रोचक है। सर्वप्रथम 1856 ई. में ब्रिंटन युगल(जॉन ब्रिंटन एवं विलियम ब्रिंटन) नें जब लाहौर और मुल्तान के बीच रेलवे लाईन विछाने का कार्य कर रहे थे तो रास्ते में पड जाने से हड़प्पा के टीलों की खुदाई करानी पड़ी। खुदायी के दौरान ऐसे पुरावशेष मिले जो देखने में काफी महत्वपूर्ण प्रतीत हुए। फलतः किसी संस्कृति विशेष से सम्बद्ध होने का अनुमान लगाया गया[1]। कालान्तर में इसके वास्तविक महत्व का ज्ञान सन् 1921 में हुआ जब सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने हडप्पा में उत्खनन कर सैन्धव संस्कृति की खोज की। तदुपरान्त 1922 ई. में राखालदास बनर्जी ने सिन्ध के लरकाना जिले में मोहनजोदड़ों नामक स्थान की खुदायी कर हड़प्पा सभ्यता से मिलते जुलते पुरावशेष खोज निकाले। इन स्थलों के उत्खननों से यह प्रमाणित हो गया कि दोनों ही स्थल एक ही संस्कृति के केन्द्र थे। इसी तारतम्य में सघन सर्वेक्षण एवं क्रमिक उत्खननों के फलस्वरूप इस सभ्यता से मिलते जुलते अनेक पुरास्थल सिन्धु नदी घाटी में खोजे गये। फलतः इसे विश्व की सुविकसित, विशालतम कांस्ययुगीन, नगरीय सभ्यता के रूप में पहचाना गया जिसका उन्नति काल सर मार्टिर ह्वीलर नें 2500 ई.पू. से 1500 ई. पू. निर्धारित किया है। चूँकि सभी पुरास्थल सिन्धु नदी घाटी में खोजे गये अतः इस सभ्यता को 'सिन्धु घाटी की सभ्यता' कहा गया।

प्रस्तावना :

सन् 1947 में भारत–पाकिस्तान के विभाजन होने के बाद भारतीय पुरातत्ववेत्ताओं जैसे जगतपति जोशी, आर. यस. बिष्ट, सुरजभान आदि ने सिन्धु सहित इसकी सहायक नदी घाटियों एवं वर्तमान में विलुप्त सरस्वती (घग्घर) नदी घाटी जो पाकिस्तान के बाहवलपुर क्षेत्र में होती हुई बीकानेर के रेगिस्तान तथा राजस्थान के उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में बहती थी में अनेक पुरास्थलों की खोज[2] की। सरस्वती एवं इसकी सहायक दृश्द्वती नदी घाटी में सिन्धु सभ्यता से सम्बन्धित लगभग 600 से अधिक पुरास्थल प्रकाश में आया है। इसकी तुलना में सिन्धु घाटी में ज्ञात पुरास्थल डेढ़ सौ के लगभग ही हैं[3]। अतः इस आधार पर सिन्धु सभ्यता का नाम सरस्वती नदी घाटी के नाम पर रखना न्यायसंगत होगा। फलतः 'सिन्धु–सरस्वती' सभ्यता अधिक उपयुक्त नाम होगा। वर्तमान में इस सभ्यता से सम्बन्धित पुरास्थल पाकिस्तान के सिन्ध, बलुचिस्तान सहित भारत में गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जम्मु कश्मीर, महाराष्ट्र के भागों में पाये जा चुके हैं। अतः यह सभ्यता उत्तरवर्ती–दक्षिणवर्ती मांडा से लेकर भगतराव तक, पूर्ववर्ती–पश्चिमवर्ती आलमगीरपुर से लेकर सुत्कांगेनडोर (ईरान की सीमार के पास) तक विशाल भू–भाग में फैला[4] है।

वस्तुतः सिन्धु सरस्वती सभ्यता के पुरास्थल मुख्यतः विशाल नदी घाटियों, समुद्रतटीय प्रदेशों, झीलों आदि क्षेत्रों में मिले हैं। इसी सन्दर्भ में सन् 1951 ई. में अमलानन्द घोष नें पुरातत्वीय सर्वेक्षण के दौरान राजस्थान के गंगानगर जिले में प्रमुख सैन्धव कालीन पुरास्थल कालीबंगा की खोज की। कालान्तर में यहाँ पर विस्तृत उत्खनन कार्य बृजवासी लाल तथा बालकृण थापड़ के निर्देशन में सन् 1956–60 एवं 1968 में हुआ। इसी तारतम्य में 1955–56 में स्वीडन की एक मिला डॉ. हाइना रीड ने गंगानगर (राज.) जिले में सूरजगढ़ के निकट रंगमहल नामक स्थान पर एक टीले का उत्खनन कर इस सभ्यता की पहचान की[5]। इस टीले में मुख्य रूप से नगर योजना के तीन खण्ड व कुछ उत्खनन से प्राप्त सामग्री प्राप्त हुई है। इन तीनों खण्डों मे एक किले का भाग है और दुसरे दो साधारण बस्ती के भाग स्पष्ट हुए हैं। तीनों खण्ड प्राचीरों से घिरे थे जो कच्ची ईटों से निर्मित थे जो 1.90 मी. चौड़ी[6] थी। सामान्यतः मिट्टी की कच्ची ईटें 1:2:3 के अनुपाम लम्बाई, चौड़ाई एवं मोटाई था।

कालीबंगा में मोहनजोदड़ों के अनुपात में दो टीले है जिसमें प्रथम ज्ञस्ठ.1अपेक्षाकृत कुछ छोटा है तथा पश्चिम में है एवं दूसरा KLB-2 पूर्व मैं है। इन दोनों टीले का नगरी नियोजन दूर्ग का आकार दिया गया था जो रक्षा प्राचीर से वेष्ठित था।

किले का भाग 240 मि. उत्तर – दक्षिण और 120 मि. पूर्व – पश्चिम में विस्तारित था इसके एक ओर 5–6 चबूतरे थे जिन पर चढ़ने की सीढियाँ थी और वहाँ पहुचनें के लिए ईटों की जुड़ाई वाला रास्ता था। सम्भवतः धार्मिक कृत्यों के लिए इसको उपयोग में लाया जाता था। इसी तरह ऐसे ही कार्य के लिए वहां वेदियों का भी प्रावधान था। इसके एक दूसरे भाग में समृद्ध समुदाय के मकान थे जो वैसी ही ईटों के बने थे जिनसे दुर्ग की प्राचीरों का निमार्ण कराया गया था। मकान एक मंजील होते थे जिनमें तीन चार कमरे, आंगन तथा नालियाँ बनी हुई थी। इस प्रकार दुर्ग (किला) प्राक सैन्धव स्थल के ऊपर ही बसाया गया था। दुर्ग को बीच से एक लम्बी दीवार द्वारा, जो पूर्व – पश्चिम में जाती थी, दो भागो में विभाजित किया गया था। ऐसा द्विभागीकरण किसी अन्य सैन्धव स्थल में नही मिलता। दुर्ग के चारों ओर सुरक्षा भित्ति बनाई गयी थी तथा स्थान – स्थान पर उसमें बुर्ज बनाये गये थे। बुर्ज तथा सुरक्षा भित्ति दोनों का निर्माण कच्ची ईटों से हुआ था। किले वाले टीले के दक्षिणी अर्धभाग में पांच या छः कच्ची ईटों के चबूतरे निर्मित थे। एक चबूतरे पर कुआं(फलक क्र. 1, चित्र सं. 2), अग्निकुण्ड, तथा पक्की ईटों का बना एक आयताकर गर्त था जिसमें पशुओं की हड्डियां थी।(फलक क्र. 1, चित्र सं. 3), दुसरे चबुतरे पर सात अग्निकुण्ड या वेदिकायें एक पंक्ति में बनी थी।(फलक क्र. 2, चित्र सं. 4), दुर्ग के इस दक्षिणी अर्धभाग पर पहुँचने के लिए उत्तर और दक्षिण की ओर सीढ़ियाँ बनाई गयी थी। स्पष्टतः इस दुर्ग का कोई धार्मिक प्रयोजन था। सम्भव है य हाँ पशुबलि दी जाती रही हों। उत्तरी अर्धभाग में कुलीन लोगों के आवास निर्मित थे।

बालीबंगा का निचला नगर भी सुरक्षा भित्ति (प्राचीर) से घिरा था। उत्खनन से दुर्ग के एक भाग में भवनों के नौ क्रमिक स्तरों का पता चला है। भवनों के आगे और पीछे दोनों ओर सड़के बनी थी। सड़को को पक्की निर्मित करने का उदाहरण केवल यहीं मिलता है। भवनों के दरवाजे गली की ओर खुलते थे। दरवाजे में शायद एक ही पल्ला लगाया जाता था, क्योंकि इसके लिए केवल एक ही छेद पाया गया है। भवन कच्ची ईटों के बने है। लकड़ी के तनों को खोखला कर, नालियों के रूप में प्रयोग किये जाने का साक्ष्य केवल यही से मिलाता है।[10] मकान 5–7 मकानों के समूह में थे। इन सामूहिक मकानों में गलियों, पोल व संकरे रास्तें से प्रत्येक कमरे या कमरों में लाया जाता था। दो चार परिवारों के लिए भीतर कुएँ भी होते थे। कही – कहीं एक कमरा वेदी के लिए भी निर्धारित था। कई मकानों के बीच सहन भी होते थे या मकानों बीच आंगन भी देखे गये है। नगर की दूसरी बस्ती के भी दो प्रमुख द्वारा थे। इस बस्ती की लम्बाई 240 X 360 मिटर थी।[11]

कालीबंगा की सभ्यता में एक फर्श के निर्माण में अलंकृत ईटों का प्रयोग किया गया है। फर्श की ईटों पर वृत को काटते हुए वृत्त (प्रतिच्छेदी वृत) का सुन्दर अलंकरण मिलता हैं। संकालिया का विचार है कि इस प्रकार के अलंकरण का कोई धार्मिक महत्त्व रहा होगा। यहां की एक अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बेलनाकार तन्दुर है। इनके नीचे पुताई की गयी है जो बिल्कुल आज के तन्दुरों जैसी हैं[3]।

सिन्ध–सरस्वती सभ्यता की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यहाँ (कालीबंगा) नगर प्राचीर के बाहर जोती हुई कृषि भूमि है जो स्पष्ट रूप से इसी क्षेत्र में देखी गई है। जुते हुए खेत में आड़ी – तिरछी जुताई की गयी है। एक ओर हराइयां (थ्नततवू) पूर्व–पश्चिम में तथा दुसरी ओर उत्तर – दक्षिण दिशा में बनाई गयी है। पहली की दूरी 30 सेमी. तथा दूसरी की दूरी 190 सेमी. है। दोनो एक दुसरे को समकोण पर काटती हुई जालीदार जुताई का नमूना प्रस्तुत करती है। कम दूरी की हराइयों में सरसों बोया जाता था। चूंकि जुताई की यह विधि आज भी उत्तरी'–पूर्वी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रचलित है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग एक ही खेत में एक साथ दो फसलें उगाना जानते थे। अनुमानतः नदियों में बाढ की सम्भावनाओं के कारण रबी की फसल गेहूं व जौ यहाँ होते थे। कुछ अनाज इकट्ठा करने की खाइयाँ भी यहाँ के समृद्ध उत्पादन की पुष्टि करती है। ताम्र से बने कृषि के कई औजार भी यहाँ की आर्थिक उन्नति के लक्षण हैं[14]।

उत्खनन से प्राप्त लाल अथवा गुलाबी रंग के चाक निर्मित मृद्भाण्ड, साधारण तश्तरियाँ, पेंदीदार और संकरे मुंह के घड़े छोटे बड़े आकार के मटके, मटकियां, कटोरे, थालियां, हत्थे वाले बर्तन तथा इनके टुकड़े मिले है। बर्तन भूरे व काले रंग के है जिस पर गोल, अर्द्धचन्द्राकार तथा तिर्यक रेखायें बनी हुई है। कुछ ऐसे भाण्ड या उनके टुकड़े मिले है जिन पर प्रकृति पर आधारित पेड़, पौधे, पशु व पक्षी की आकृतियां चित्रित है। वहां कूबड़ वाले बैल, भैस, सूअर, बारहसिंगा, ऊंट, पालतू गधा आदि की हड्डियां मिली है। गोमेद, चाल्सिडनी तथा कार्नीलियन से बने पाषाण उपकरण, ताम्र निर्मित कुल्हाड़ी तथा परशु सेलखड़ी, शंख, कार्नीलियन एवं तांबे के मनके, पकी मिट्टी और तांबे की बनी चूड़ियां, पत्थर के सिलबट्टे, मिट्टी की खिलौना गाड़ी के पहिये आदि खुदाई में प्राप्त हुए हैं[15]। उल्लेखनीय हो कि कालीबंगा के मृद्भाण्ड सोथी संस्कृति के मृद्भाण्डों से समानता रखते हैं। मृद्भाण्डों पर रेखाच्छादित (भ्ंजबीमक स्ववचे), पत्तियों, मत्स्य शल्क तथा त्रिकोण आदि का चित्रांकन प्रौढ़ सैन्धव काल में भी प्रचलित[16] था।

इस सभ्यता के लोगों का कला – कौशल चित्रों तक सीमित नही था अपितु श्रृंगार के उपकरणों में व आभूषणों के बनाने में यहां के निवासियों का कला – प्रेम व सांस्कृतिक रूचि का बोध होता है। काँसे के दर्पण, हाथी दाँत का कंधा, सोने व मूँगे तथा सीपों के आभूषण और तांबे की पिने इत्यादि यहाँ की उन्नत सभ्यता के प्रतीक है। इस युग की विकसित सभ्यता कई एक मुहरों से, जिन पर पशु और पुरूषों की आकृतियां बनी है, या गाय के मुख वाले प्याले तथा तांबे का बैल आदि से सिद्ध भी होता है।उत्खनन से प्राप्त सेलखड़ी तथा मिट्टी की मुहरें एवं मृद्भाण्ड के टुकड़ों मे से कुछ लेखयुक्त है तथा इनके अक्षर हड़प्पाई लिपि के समान है। लेखयुक्त बर्तन के टुकड़ो से स्पष्ट हो जाता है कि हड़प्पा लिपि दाईं से बाईं ओर को लिखी जाती थी।

कालीबंगा सभ्यता के आवास क्षेत्र के लगभग 200 मी. दक्षिणी भाग से कब्रिस्तान मिला है[17] जिससे शवाधान की कुछ नई विधियों पर प्रकाश पड़ता है। कालीबंगा के निवासी अपने शवों को अंडाकार खण्ड में सीधी उत्तर की ओर सिर रख कर मृत्यु सम्बंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे। दूसरी विधि में शव की टाँगे समेट कर गाड़ा जाता था। तीसरी विधि में शव के साथ बर्तन और एक–एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ने की प्रथा थी।

उक्त लेख से स्पष्ट है कि सिन्धु–सरस्वती सभ्यता काफी समृद्ध एवं विकसितोन्मुख थी। दुर्भाग्यवश कुछ प्राकृतिक कारणों के परिणामस्वरूप कालान्तर में सरस्वती नदी लुप्त हो गई। फलस्वरूप ऐसी समृद्ध सभ्यता के केन्द्र का ह्रास हो गया। इस सभ्यता के लोप होने के सम्बन्ध में डां. गोपीनाथ शर्मा ने लिखा है कि '' सम्भवतः भूचाल से या कच्छ के रन की रेत से भर जाने से ऐसा हुआ हो। जो समुद्री हवाएँ पहले इस ओर से नमी लाती थी और वर्शा के कारण बनती थी, वे ही हवाएँ सूखी चलने लगी और कालान्तर में यह भू – भाग रेत का समुद्र बन गया।[18] के. सी. श्रीवास्तव के अनुसार भूकम्प आने के प्राचीनतम साक्ष्य यहां से मिलते है।

इस प्रकार ज्यों – ज्यों इन नदियों का पानी सूखता गया और अन्य सहायक नदियों के बहाव के मार्ग ओर मुड़ते गये और धीरे – धीरे वर्शा की कमी आती गई तो इस क्षेत्र का कृशि का व्यवसाय मंदा पड़ गया। सूखे के कारण जंगल नश्ट हो गये और बची–खुची हरियाली चराई से कम होती चली गई। यहां तक कि मरूस्थल की बढोतरी ने पीने के पानी में कमी कर यहां की समृद्ध बस्ती को उजाड़ दिया। सम्भवतः ये लोग अन्य राजस्थानीय या पंजाब की बस्तियों की ओर चल पड़े और अपने अनुभव से उन स्थानों की सभ्यता को समृद्ध बनाने में लग गये। इसी सन्दर्भ में सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के ह्रास का कारण सर मार्टिमर ह्वीलर नें ऋग्वेद मं वर्णित आर्य एवं अनार्य के युद्ध से वाह्य आक्रमण से लगाया है। लोथल, भगतराव के उत्खनन से मिले नदियों के जमाव से साहनी एवं एस.आ. राव ने इस सभ्यता के विनाश का कारण बाढ. को माना है। इन्हीं पुराशास्त्रियों के साथ अर्नेष्ट मैके भी मोहनजादड़ों एवं चन्हुदड़ों से प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर बाढ़ को ही ह्रास का प्रमुख कारण माना है। परन्तु प्रमुख पुराशास्त्री बी. बी. लाल ने कच्छ क्षेत्र में धौलावीरा के उत्खनन से अनुमान लगाया है कि वाणिज्य एवं व्यापार में गिरावट के कारण यह उन्नत सभ्यता झुकर संस्कृति अथवा परवर्ती हड़प्पा सभ्यता में रूपान्तरित होती चली गयी। इसी श्रृंखला में डी. पी. अग्रवाल ने इस सभ्यतो के नष्ट होने के प्रमुख करणों में भूगर्भीय उथल–पुथल को माना है। [19]इसी के फलस्वरूप सरस्वती नदी सुखती चली गयी एवं कृषि व्यवसाय मंदा पड़ गया। यहां तक कि इस क्षेत्र में मरूस्थल की बढ़ोत्तरी ने भी पीने के पानी में कमी कर समृद्ध बस्ती को उजाड़ दिया। वस्तुतः मूल कारण जो भी रहो हो परन्तु इस सभ्यता के पतन से राजस्थान साहित निकटवर्ती पंजाब, हरियाणा में भी सैन्धव–सरस्वती परम्पराओं का धीरे–धीरे पतन हो गया एवं कालीबंगा की समृद्ध बस्ती हमेंशा के लिए उजाड़ होकर राजस्थान के अहाड़, गिलुंद एवं बालाथल आदि स्थानों की तरफ पलायन होकर ताम्रपाषाणिक संस्कृति के रूप में स्थापित हुई।

आधुनिक परिदृश्य में विवेच्य क्षेत्र में व्याप्त परम्पराओं के अध्ययन से विदित होता है कि लगभग 2500 ई. पू. की कालीबंगा की सांस्कृति परम्पराएँ आज भी जीवित हैं। यथा भवन निर्माण, हवन जैसे धार्मिक क्रियाओं हेतु अग्निकुण्ड या वेदिका का निर्माण, पानी पीने हेतु गहरे स्वच्छ कुएँ, उन्नत किस्म के मृण्ण कला, पाषाण एवं धातु कला, मृद्भाण्डों पर सुन्दर चित्रांकन ईत्यादि। इसी प्रकार कृषि के क्षेत्र में आज भी इस क्षेत्र में एक ही मौसम में दो फसलों को उगाया जाता है। खेत में आड़ी–तिरछी जुताई जैसे एक ओर हराइयां पूर्व–पश्चिम में तथा दुसरी ओर उत्तर–दक्षिण दिशा बनाते हुए समकोण पर काटती हुई जालीदार जुताई का नमूना की यह विधि वर्तमान में भी उत्तरी'–पूर्वी राजस्थान सहित हरियाणा, पंजाब तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रचलित है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1.मिश्र, श्याम मनोहर, सैन्धव संस्कृति, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ, 2003, पृ. 1–2
2.वर्मा, राधाकान्त, पुरातत्व अनुशीलन, भाग–1, परमज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृ. 161
3.वही, पृ. 161
4.वही
5.वही, पृ. 162 एवं ईरफान हबीब, इंडस सिवलाईजेशन, तुलिका बुक्स, नई दिल्ली, 2002, पृ. 22, मैप, 2.1
6.पानगड़िया, बी.एल., 'राजस्थान का इतिहास, जयपुर, 1996, पृ. 8
7.वर्मा, राधाकान्त, पुरातत्व अनुशीलन भाग–2, परमज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003, पृ. 69
8.वही, पृ. 69–70
9.श्रीवास्तव, के.सी.: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति इलाहाबाद, 2005–06, पृ. 52
10.वही, पृ. 53
11.शर्मा, डॉ. गोपीनाथ : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर, 2012, पृ. 21
12.वर्मा, राधाकान्त, वही, पृ. 72
13.श्रीवास्तव, के.सी., वही, पृ. 52
14.शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, वही, पृ. 23
15.श्रीवास्तव, के.सी., वही, पृ. 52
16.मिश्र, श्याम मनोहर, वही, पृ. 30
17.वर्मा, राधाकान्त, वही, पृ. 71
18.शर्मा एवं व्यास, डां. कालूराम एवं प्रकाश : राजस्थान का इतिहास, जयपुर, 2006, पृ. 46
19.वर्मा, राधाकान्त, ' पुरातत्व अनुशीलन भाग–1, परमज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003, पृ. 185–188

फलक क्र.1

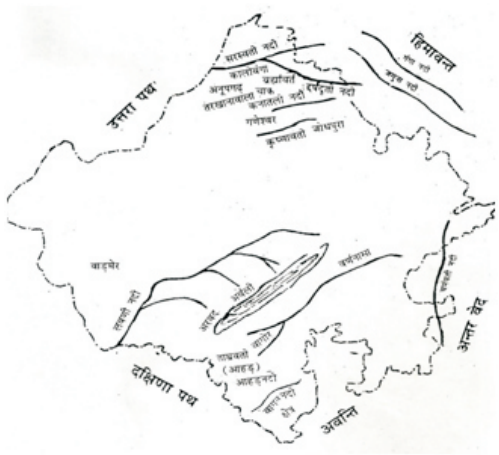

चित्र सं. 1

चित्र सं. 2

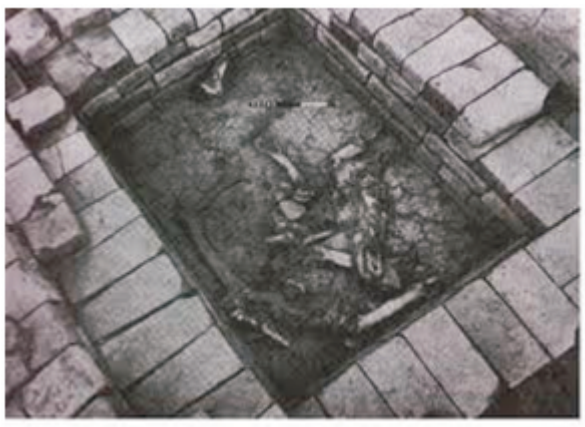

चित्र सं. 3

1.सरस्वती नदी के तट पर कालीबंगा सिन्धु–सरस्वती सभ्यता कालीन स्थल।
2.एक चबूतरे पर कुआं तथा पक्की ईटों से निर्मित नाली।
3.चबूतरे पर पक्की ईंटों से निर्मित आयताकार अग्निकुण्ड जिसमें पशुओं की हड्डियां अवशेषित हैं।

फलक क्र.2

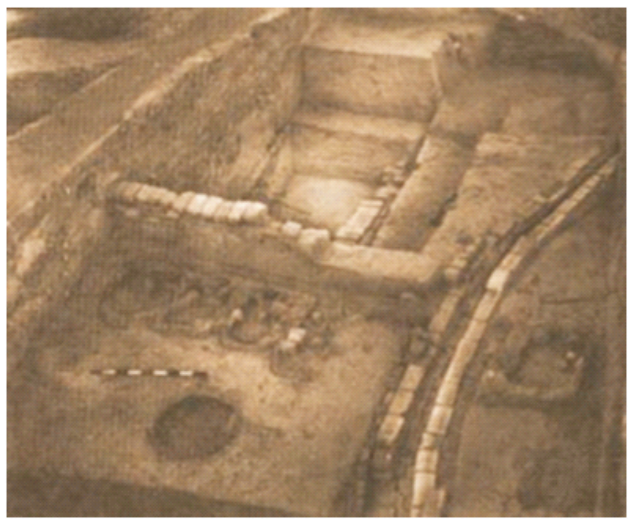

चित्र सं. 4

4.चबूतरे पर एक पंक्ति में निर्मित अग्निकुण्ड या वेदिकायें।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net